युग-संधि के इस पार

जंगल
किसी शेर के बाप का नहीं होता
न तो भूमि उसकी है
न हीं उसने कोई पेड़ लगाया है
मगर वह राजा कहलाता है
जंगल का राजा

(जंगल का राजा)

... इतिहास की गलत व्याख्या
भूत को झूठ
वर्तमान को गुमराह
और भविष्य को
दिशाहीन करती है
कलम किया हुआ पौंधा
मूल स्वभाव का वृक्ष
कभी नहीं बनता

(इतिहास की व्याख्या)

... गली का कचड़ा तो
निगम के हाथ है
जब चाहे उठवा ले
मगर बस्ती के मूल लोग
ईश्वर की असभ्य कृति है
उन्हें तो राम जी सँभाले
या फिर अल्लाह ही ...

(ईश्वर की असभ्य कृति)

कोई वदन!
कोई वस्त्र खरीदे
कोई बदन!
कोई वस्त्र ख़रीदे
इससे पहले
वस्त्रों ने शुरू कर दिया है
ख़रीदकर बदन को पहनना

बेचारी बेजान डम्मियाँ
नहीं भर पाती हैं
वस्त्रों के लुक में वो जान
इसलिए ...

(वस्त्रों ने शुरू कर दिया है)

बैठे रहें अपनी जगह
अपना दिल थाम लें

ज़रूरी सूचना
कपड़े कम होंगे
और बदन ज़्यादा
दर्शक अपने नज़र की
आबरू स्वयं बचायें
आँखों पर पर्दा संभव नहीं
हो सके तो

(काला चश्मा)

...दूसरा सोचता है
यदि समाज में कोई बर्बर जाहिल बेघर
भूखा कंगला और बीमार न हो तो
समाज सेवा को समर्पित
हमारी दुकान का क्या होगा
कल के भूखों का
यदि आज पेट भरने लगे
तो हमें जो सुबह-शाम
वो सर झुकाकर ठोकते हैं
उस सलाम का क्या होगा

(दो सोच)

... हम कल्पना करें
कभी दुनिया में
यदि सब कुछ ठहर जाये
और अमीरी जाती रहे
तो इन चमकती धातुओं का
जीवन मूल्य क्या है
उस रोटी के सामने
जो जीवन की
निरंतरता बनाये रखती है

(जीवन मूल्य)

एक संपन्न आदमी
बच्चा पैदा करता है
और विरासत में उसे देता है
अपना अर्जित आत्मविश्वास
आत्मसम्मान
अपना अर्जित धन
और अपनी अर्जित संपन्नता
एक विपन्न आदमी
बच्चा पैदा करता है
और ...

(आदमी की विरासत)

जब तक हमारे पाँव सक्षम थे
बैसाखी की ज़रूरत नहीं थी
हमारी कमर जब झुकने लगी
हमने लाठी का सहारा लिया
क़दम कमज़ोर पड़े तो
घोड़े की पीठ पर सवार हो गए
फिर पहिया और पहिये में इंजन
और इंजन में फिर पंख ...

(बुद्धि की शुरुआत)

खिलना
मुरझाना
और गिर जाना
यह सामान्य बात नहीं है
यह जीवन है
प्रकृति का विधान
मत कहे कोई
इसे...

(प्रकृति का विधान)